मिरांडा की छतरी

वैल बिरो

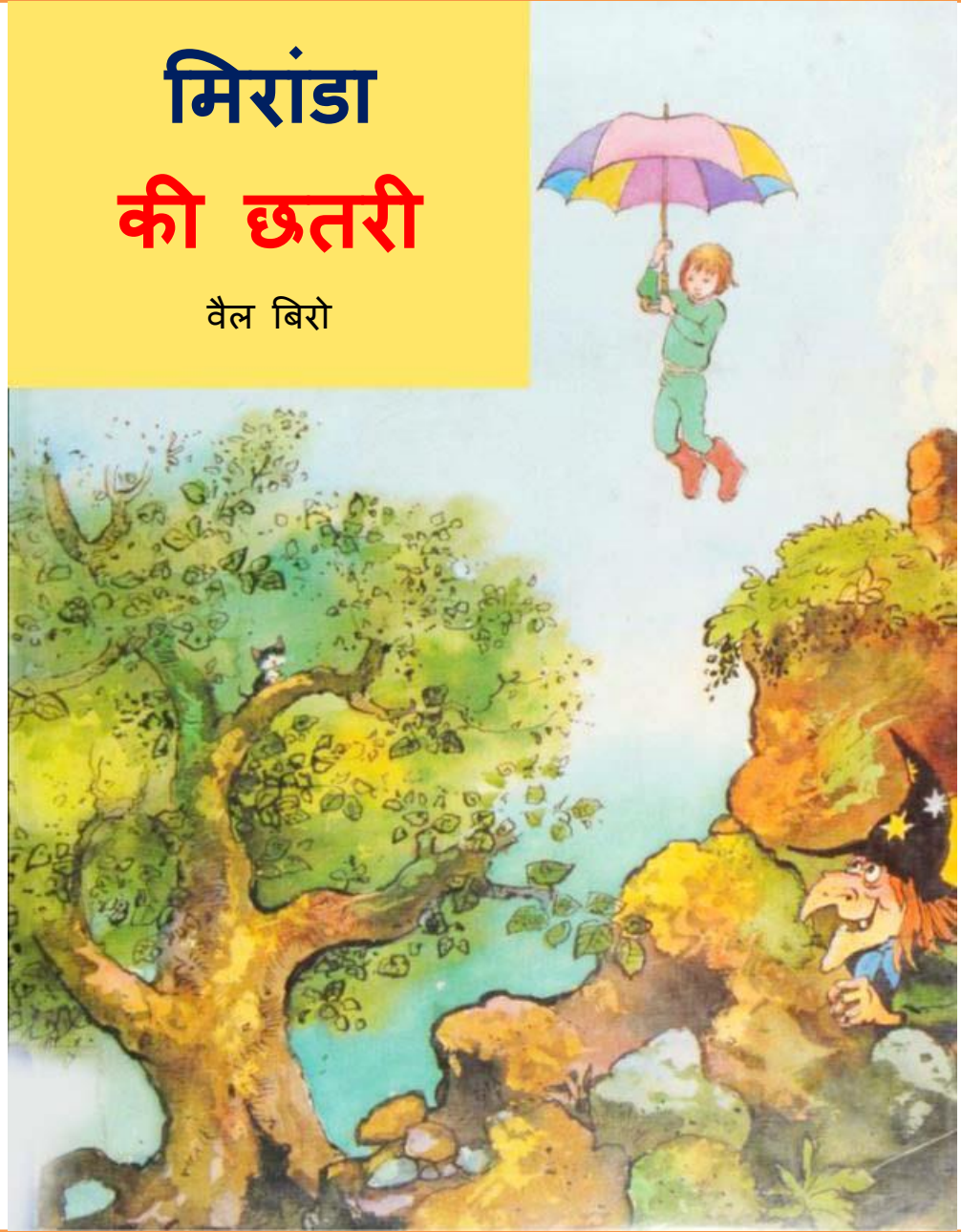

मिरांडा की छतरी

वैल बिरो

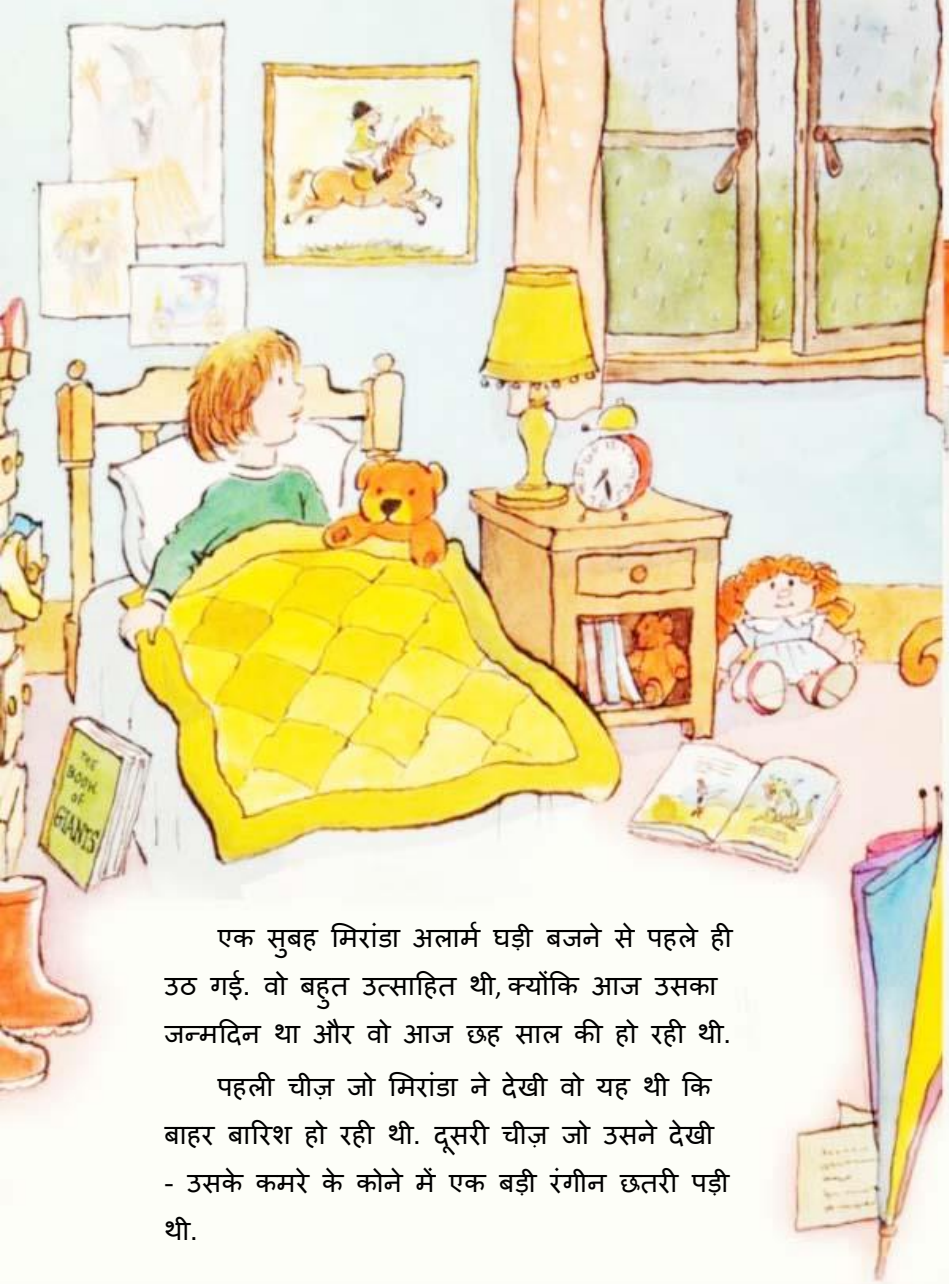

एक सुबह मिरांडा अलार्म घड़ी बजने से पहले ही उठ गई. वो बहुत उत्साहित थी, क्योंकि आज उसका जन्मदिन था और वो आज छह साल की हो रही थी.

पहली चीज़ जो मिरांडा ने देखी वो यह थी कि बाहर बारिश हो रही थी. दूसरी चीज़ जो उसने देखी - उसके कमरे के कोने में एक बड़ी रंगीन छतरी पड़ी थी.

"जन्मदिन का एक उपहार!" वो चिल्लाई और फिर बिस्तर से कूद पड़ी. छतरी के कार्ड पर लिखा था, "मिरांडा को, जन्मदिन मुबारक!" वो खुश थी कि उसके पास बरसात के दिन के लिए एक अच्छा छाता था. इसलिए उसने घूमने जाने और अपने नए छाते को आज़माने का फैसला किया.

जब वो सड़क पर चल रही थी तो बड़ी छतरी ने उसे सूखा रखने का काम किया. लेकिन जल्द ही उसे सड़क अजीब और अलग दिखने लगी. अब वो उन राक्षसों की भूमि जैसा लग रही थी जिसके बारे में मिरांडा कल रात ही पढ़ रही थी.

इसलिए जब उसने घास में एक बहुत बड़ा चश्मा पड़ा देखा तो उसे कोई आश्चर्य नहीं हुआ. उसने उसे उठा लिया कि कहीं कोई उस चश्मे को कुचल न दे, और उसने चश्मे को अपनी बांह के नीचे दबा लिया.

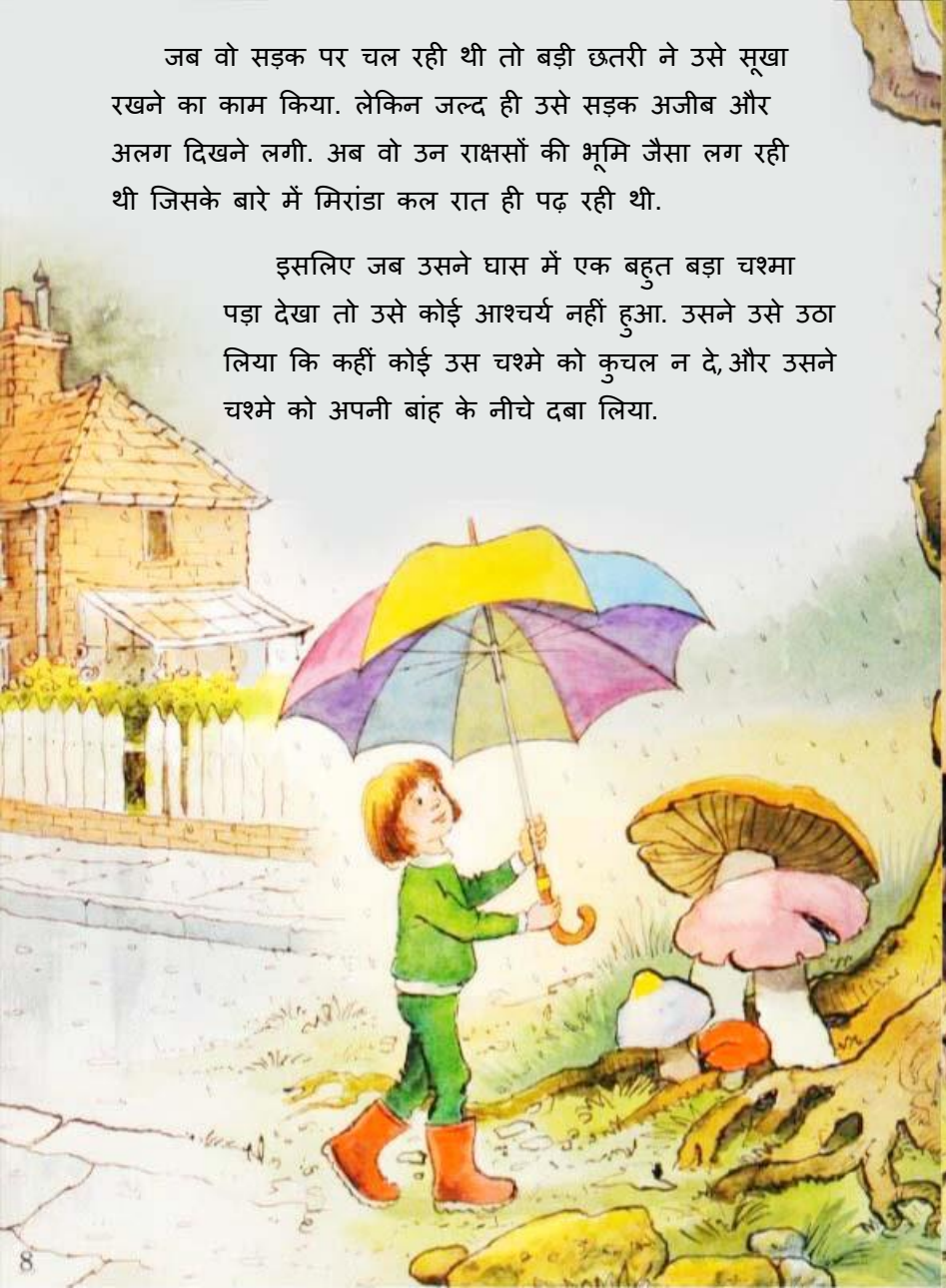

लेकिन वो अपनी नाक के ठीक सामने कुछ देखकर हैरान रह गई. उसके छाते पर एक अंगूठी थी जिस पर उसने पहले ध्यान नहीं गया था. सोने की अंगूठी पर काले अक्षरों में "ऊपर" और "नीचे" शब्द लिखे हुए थे.

और जब मिरांडा ने अंगूठी को ऊपर की ओर धकेला, तो झट से ...

... छाता उसे बादलों के बीच से सीधा ऊपर ले गया! ऊपर सूरज तेज़ चमक रहा था और अब उसे छाते की कोई ज़रूरत नहीं थी, सिवाय इसके कि अब वो छाते को एक पैराशूट के रूप में इस्तेमाल कर रही थी.

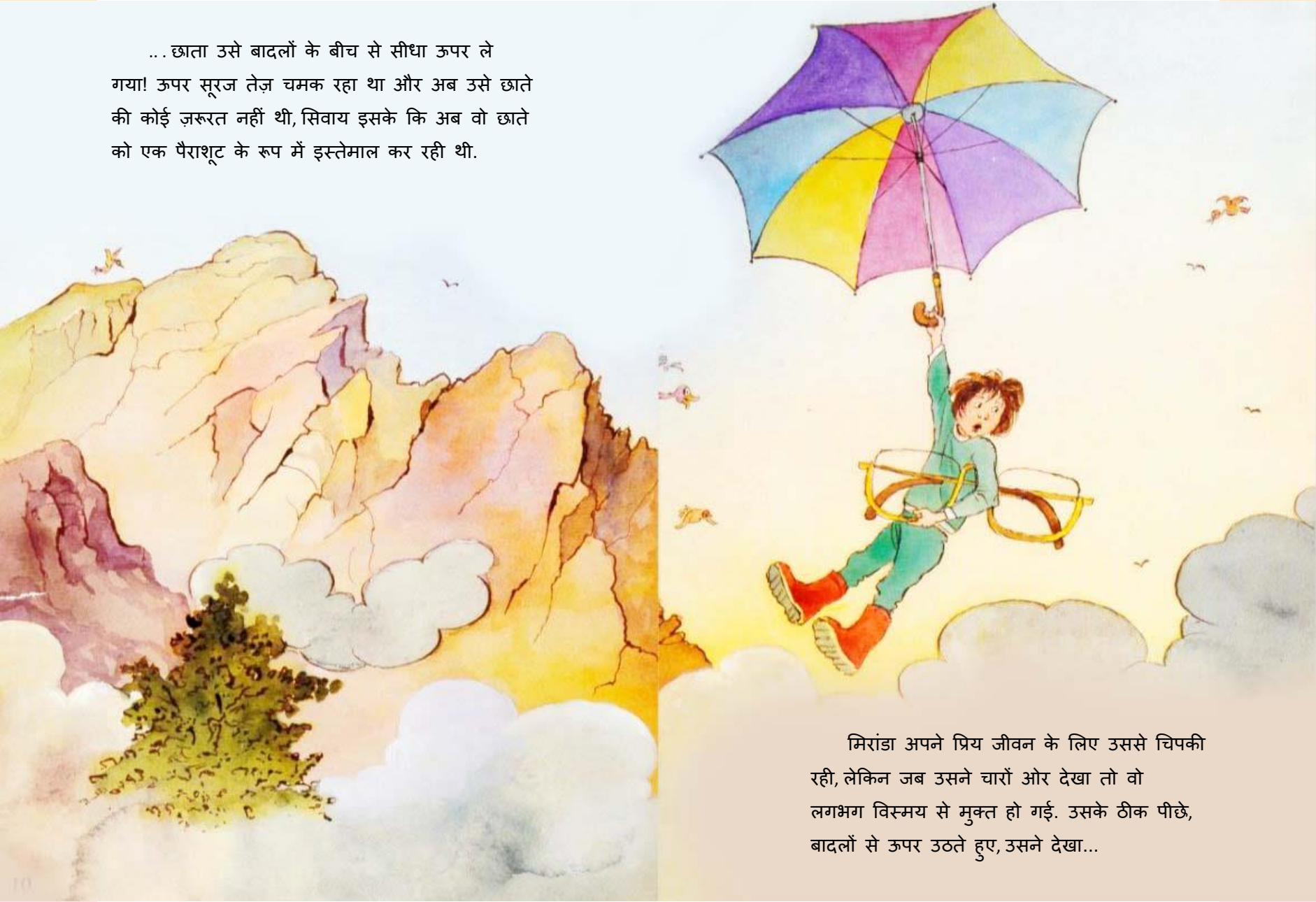

मिरांडा अपने प्रिय जीवन के लिए उससे चिपकी रही, लेकिन जब उसने चारों ओर देखा तो वो लगभग विस्मय से मुक्त हो गई. उसके ठीक पीछे, बादलों से ऊपर उठते हुए, उसने देखा...

...एक विशाल दैत्य!

"हो हो हो!" दैत्य दहाड़ा. "हमारे यहाँ यह क्या है? एक तितली या फिर एक कीट? वो मेरे नाश्ते की चीज़ है!" और फिर दैत्य ने मिरांडा को पकड़ने की कोशिश की, लेकिन वो चूक गया.

"माफ करें," मिरांडा ने कहा, "लेकिन मैं कोई कीट नहीं हूं. मैं एक लड़की हूं और आज छह साल की हुई हूं."

दैत्य बुरी तरह मुस्कुराया. "ओ हो! एक लड़की, तुम कहती हो? बेहतर और बेहतर. मैं तुम्हें दोपहर के भोजन के लिए भूनकर खाऊंगा!" और उसने फिर मिरांडा को पकड़ने की दुबारा कोशिश की लेकिन वो फिर से चूक गया. दैत्य बार-बार पकड़ता रहा लेकिन हर बार चूकता रहा.

"माफ़ करें," मिरांडा ने फिर कहा, "लेकिन आप मुझे पकड़ने में बहुत अच्छे नहीं हैं. यदि आप मुझसे पूछें तो मुझे लगता है कि आपको एक चश्मे की ज़रुरत है."

"चश्मा!" दैत्य ने विलाप किया. “मुझे एक चश्मा ज़रूर चाहिए! मैंने कल अपना चश्मा खो दिया और मैं उसे कहीं भी नहीं ढूंढ पाया. मैं अपने चश्मे के बिना चमगादड़ की तरह अंधा हूँ!” और फिर दैत्य रोने लगा.

“क्षमा करें,” मिरांडा ने कहा, "लेकिन क्या ये चश्मा आपका हो सकता है?” और उसने चश्मा दैत्य की नाक के ठीक सामने रख दिया.

"मेरे सात मील के जूते की कसम!" दैत्य चिल्लाया. "बेशक वो चश्मा मेरा ही है! तुम कितनी चतुर लड़की हो!” दैत्य ने अपना चश्मा उठाया और उसे अपनी नाक पर ठीक से लगाने लगा.

मिरांडा ने इंतजार नहीं किया. अब जब दैत्य फिर से देख सकता था, तो वो जानती थी कि अगली बार जब वो मिरांडा को पकड़ने की कोशिश करेगा तो फिर वो चूकेगा नहीं. इसलिए जब तक कि दैत्य ने चश्मा अपनी सही जगह पर टिकाया, मिरांडा अपने छाते के साथ झपट्टा मारकर मीलों दूर जा चुकी थी.

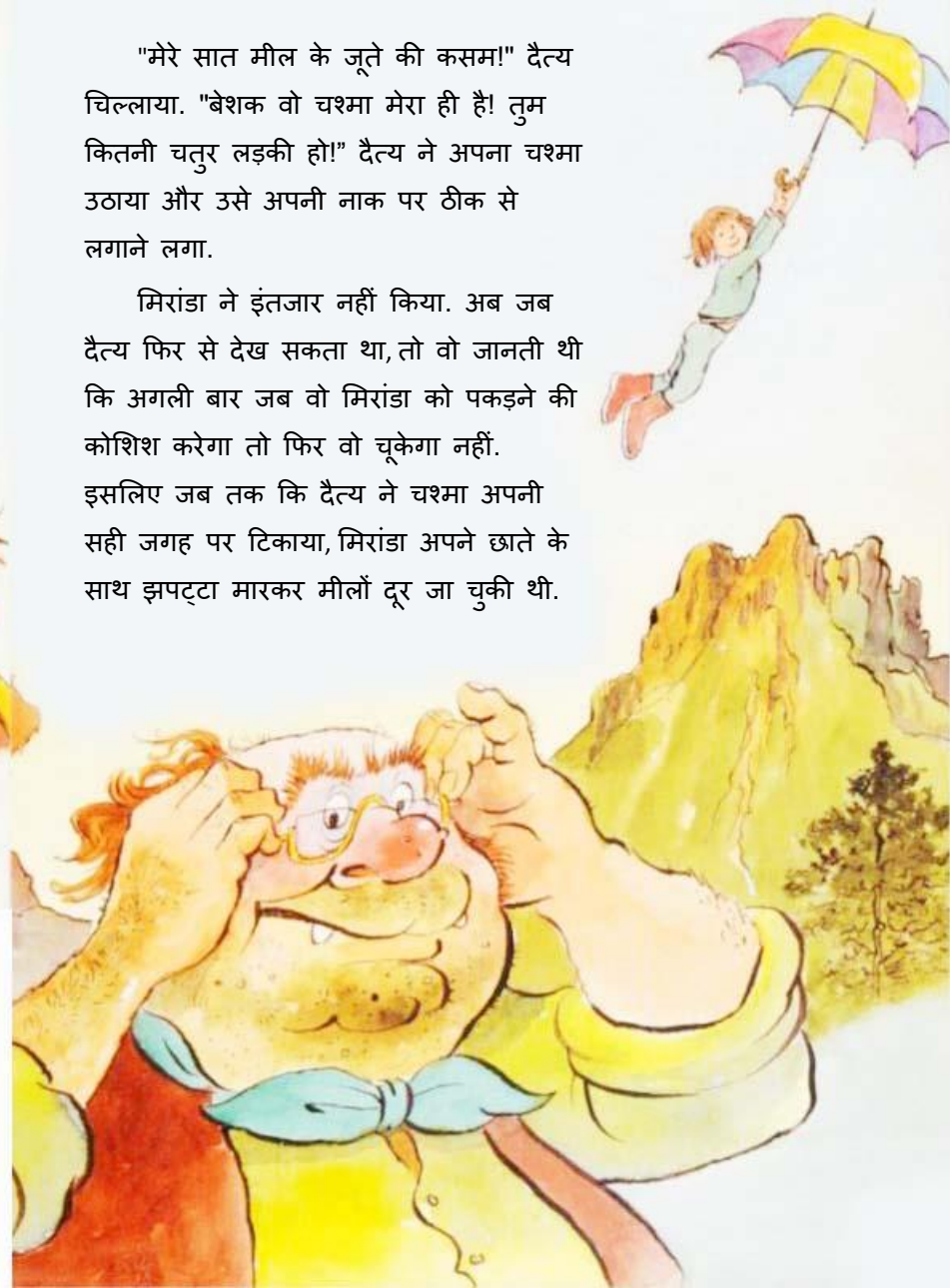

जल्द ही उसके हाथ छाते को पकड़ने से थकने लगे, इसलिए उसने अंगूठी को नीचे धकेल दिया और फिर वो एक पेड़ पर जा गिरी. वो पेड़ एक अंधेरे जंगल के किनारे पर खड़ा था. मिरांडा को पास में एक गुफा दिखाई दे रही थी, जिसकी चिमनी से धुआं निकल रहा था.

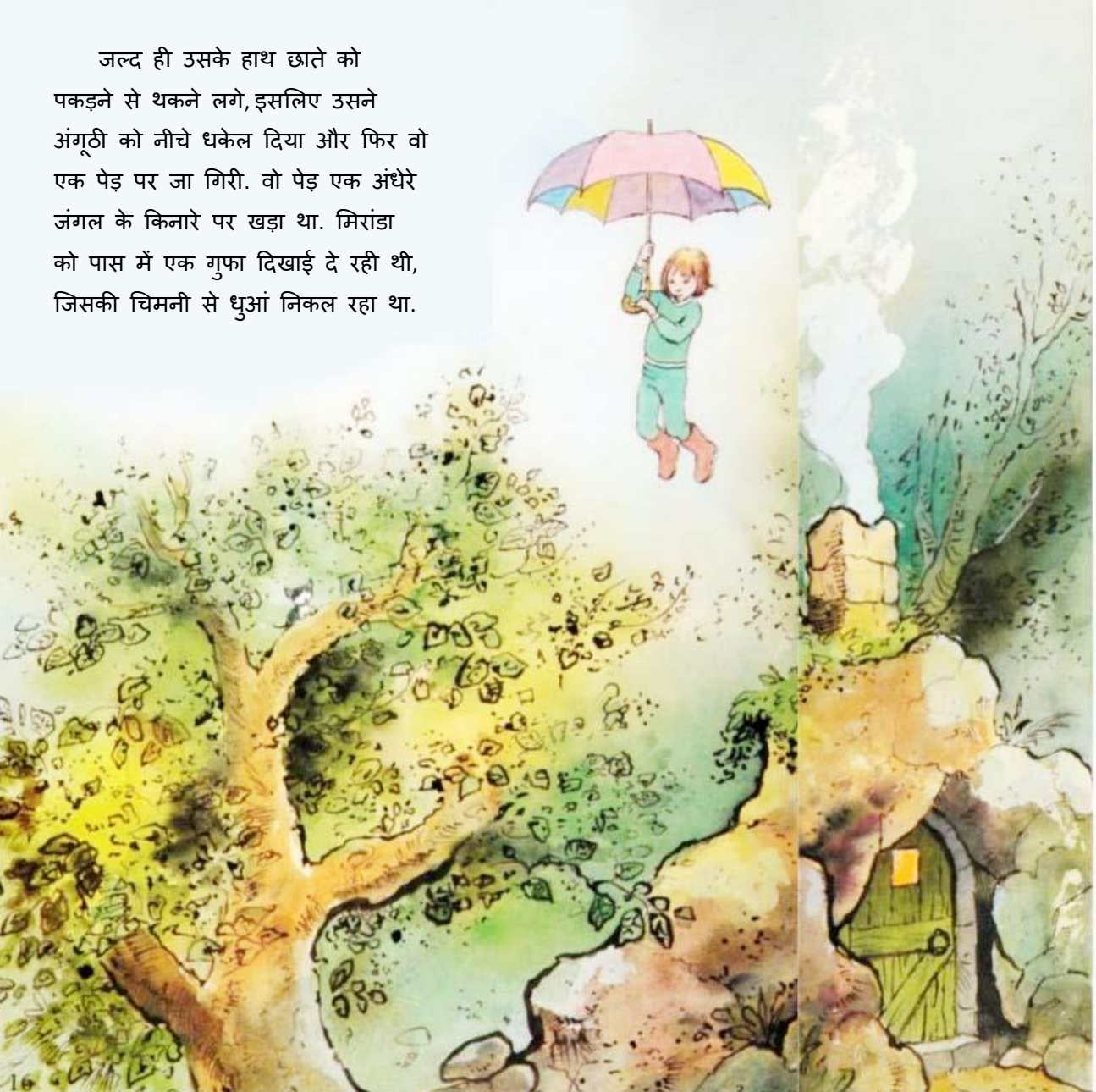

"मियाऊँ!" उसके ठीक पीछे किसी ने आवाज़ की. वो सफेद चेहरे वाला एक छोटा बिल्ली का बच्चा था. "मैं नीचे नहीं उतर सकती," बिल्ली कराह उठी. "कृपा मुझे घर ले जाओ. मैं वहाँ उस गुफा में रहती हूँ."

मिरांडा को बिल्ली के बच्चे के लिए खेद महसूस हुआ, इसलिए उसने उसे अपने पायजामे में छिपा लिया. फिर उसने छाता उठाया और धीरे-धीरे तैरती हुई गुफा के दरवाजे तक पहुँची. गुफा का दरवाज़ा खुला था.

वहां पर ऊंची झोपड़ी में एक झुकी हुई बूढ़ी चुड़ैल काफी दुखी दिखाई दे रही थी. लेकिन जब उसने मिरांडा को देखा तो वो मुस्कुरा दी, जिससे वो और भी भयानक लगने लगी. "आह-हा-हा," उसने कहा. “मैं देख रही हूँ, छाते के साथ एक लड़की! बस वो मेरे जंतर-मंतर के लिए एकदम सही चीज़ है!” और फिर चुड़ैल ने मिरांडा को (बिना चूके) मजबूती से पकड़ लिया.

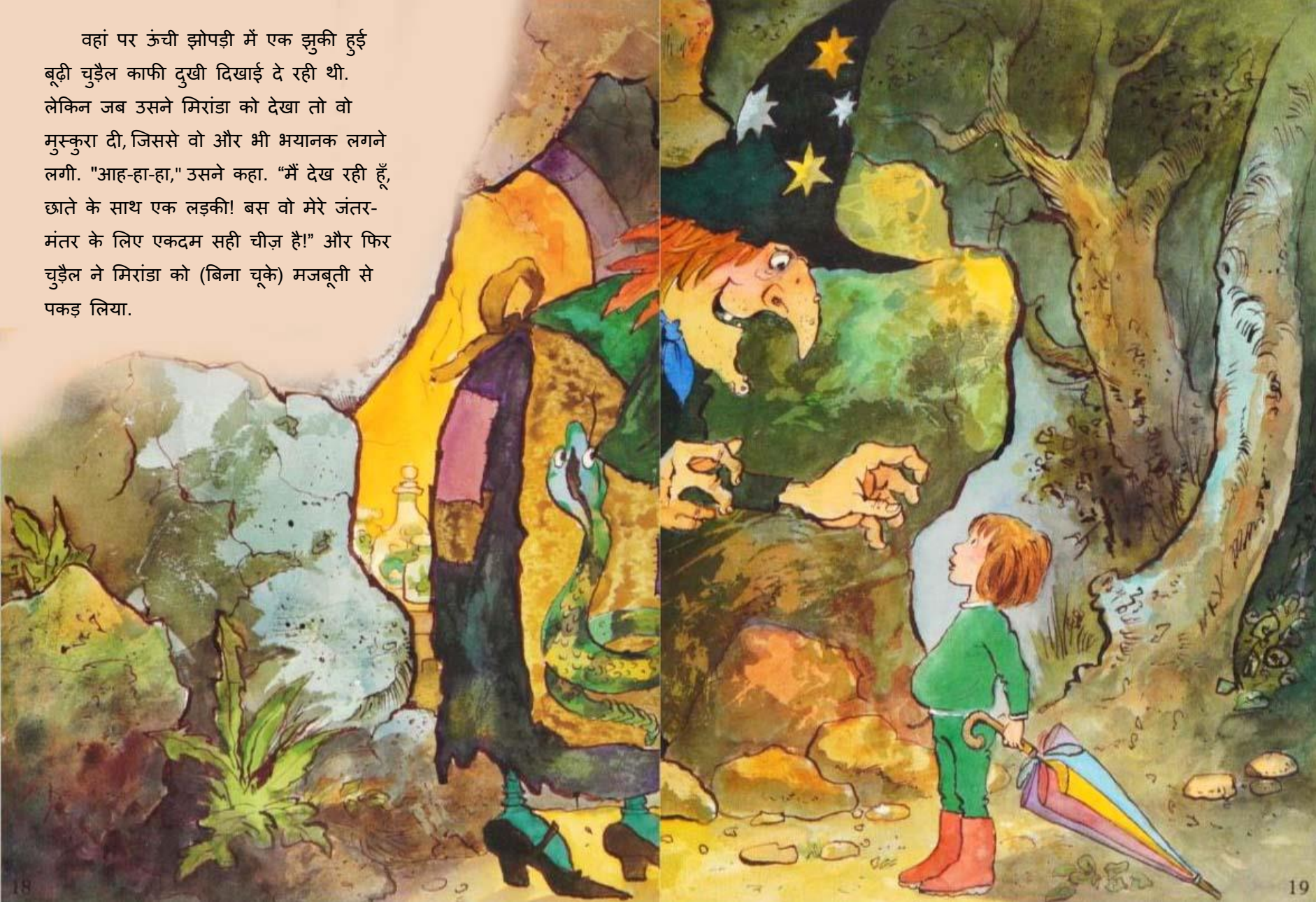

वो आग पर खाना पकाते हुए एक बड़े बर्तन के पास वह मिरांडा को ले गई. "यह वो जगह है जहां मैं अपने जंतर-मंतर को उबालती हूं. देखो, मुझे उसके लिए पहले से ही मेंढक, सांप और बीटल मिल गए हैं. मिश्रण में जो कुछ गायब है वो एक बड़ी छतरी और एक छोटी लड़की है. चुड़ैल, मिरांडा और उसके छाते को बर्तन में फेंकने ही वाली थी, तभी मिरांडा बोली.

"क्षमा करें, लेकिन क्या आपके मिश्रण में बिल्ली का बच्चा भी है?"

चुड़ैल बहुत गुस्सा हुई. "बिल्ली का बच्चा? तुम मुझे क्या समझती हो? मैं बिल्ली के बच्चों को नहीं उबालती हूँ. वैसे मैंने कल ही अपनी बिल्ली का बच्चा खो दिया है. इसीलिए मैं इतनी दुखी हूँ!" और फिर चुड़ैल रोने लगी.

"माफ़ करें," मिरांडा ने फिर कहा, "लेकिन क्या यह बिल्ली का बच्चा आपका है?" और उसने बिल्ली के बच्चे को चुड़ैल की नाक के सामने पकड़ कर रखा.

"मेरे सितारों और रैटलस्नेक की कसम!" चुड़ैल चिल्लाई. "निश्चित रूप यह बिल्ली का बच्चा मेरा ही है! कितनी चतुर लड़की हो तुम!" उसने मिरांडा को जाने दिया और बिल्ली के बच्चे को पकड़ लिया, "मेरी प्यारी बिल्ली!" और चुड़ैल इस तरह की अन्य मूर्खतापूर्ण बातें करने लगी.

मिरांडा ने मौका देखा और वो झट से दरवाजे से बाहर निकल गयी. वो अपना छाता खोलने ही वाली थी कि धरती हिलने लगी और उसने घबराकर ऊपर देखा.

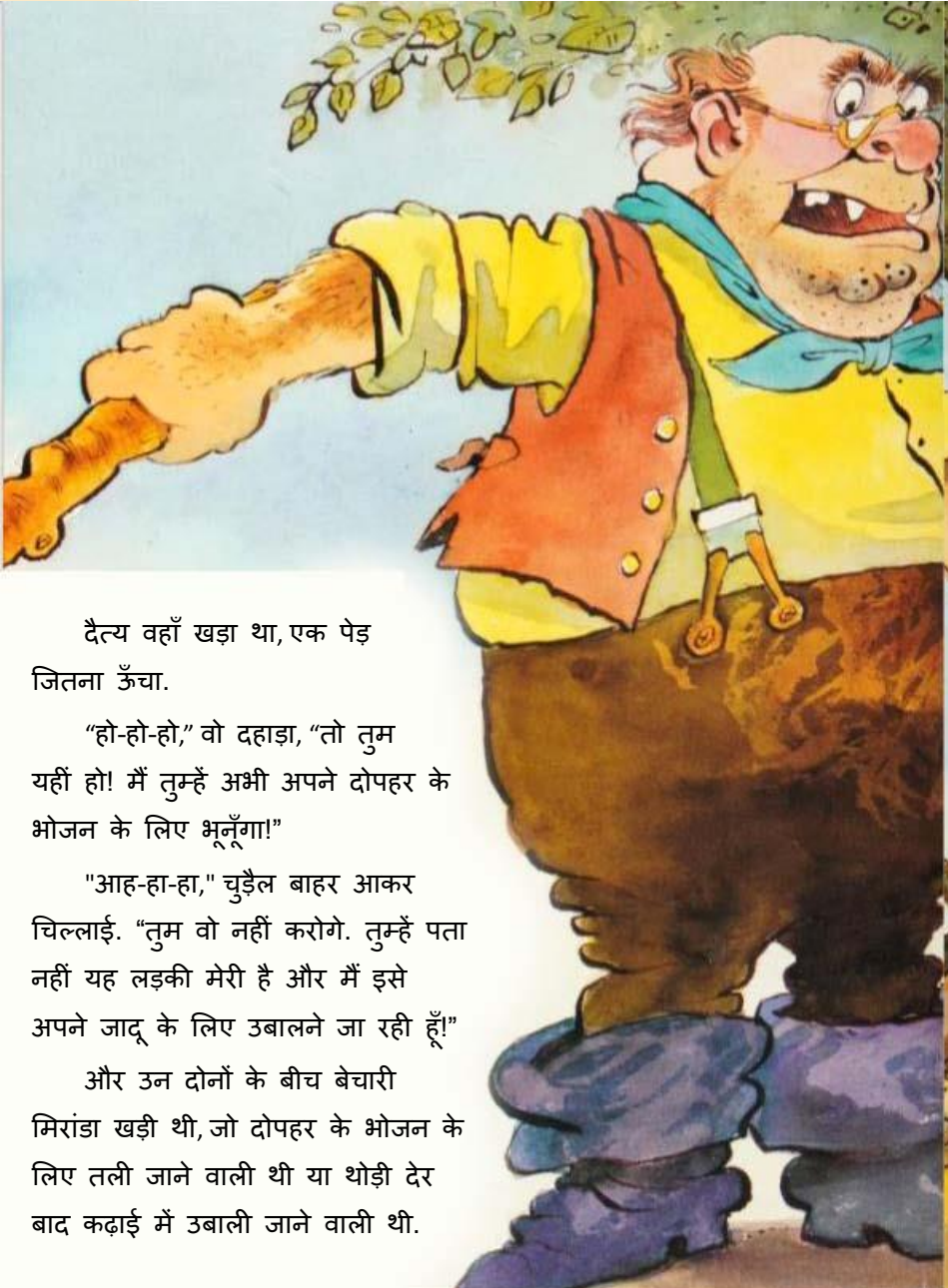

दैत्य वहाँ खड़ा था, एक पेड़ जितना ऊँचा.

“हो-हो-हो,” वो दहाड़ा, “तो तुम यहीं हो! मैं तुम्हें अभी अपने दोपहर के भोजन के लिए भूनूँगा!”

"आह-हा-हा," चुड़ैल बाहर आकर चिल्लाई. “तुम वो नहीं करोगे. तुम्हें पता नहीं यह लड़की मेरी है और मैं इसे अपने जादू के लिए उबालने जा रही हूँ!”

और उन दोनों के बीच बेचारी मिरांडा खड़ी थी, जो दोपहर के भोजन के लिए तली जाने वाली थी या थोड़ी देर बाद कढ़ाई में उबाली जाने वाली थी.

तभी बिल्ली का बच्चा बोला.

"तुम्हें उसे उबालना नहीं," उसने चुड़ैल से कहा. "उस लड़की के बिना मैं अभी भी उस पेड़ पर अटकी होती!"

फिर मिरांडा दैत्य से बोली.

"तुम्हें मुझे भूनना नहीं चाहिए," उसने दैत्य से कहा. "मेरे बिना तुम अभी भी चमगादड़ की तरह अंधे होते!"

दैत्य और चुड़ैल को तब इस बात का एहसास हुआ कि वे कितने स्वार्थी थे. उन्हें अपने आप पर इतनी शर्म महसूस हुई कि वे एक-दूसरे पर चिल्लाने लगे.

“तुम एक दुष्ट चुड़ैल हो!” दैत्य अपनी गदा हिलाते हुए चिल्लाया.

"तुम एक एहसान-फरामोश दैत्य हो!" चुड़ैल अपनी झाड़ू हिलाते हुए चिल्लाई. दोनों ने शायद आपस में झगड़ा शुरू कर दिया होता, लेकिन असल में वे एक-दूसरे से बहुत डरते थे.

मिरांडा ने और सुनने के लिए इंतजार नहीं किया. उसने अपना छाता खोला, अंगूठी को ऊपर की ओर धकेला और झपट्टा मारा. छाता उसे सीधे आकाश में उसके घर तक उड़ाकर ले गया.

फिर वो सीधे अपने बिस्तर पर जाकर लेट गई, और तभी उसे अपनी अलार्म घड़ी की "टिंगा-लिंगा-लिंग" की ध्वनि सुनाई दी. उसने नीचे से अपनी माँ को पुकारते हुए भी सुना.

“जन्मदिन मुबारक हो, मिरांडा! जल्दी करो, नाश्ता तैयार है!”

सूरज की रोशनी उसके कमरे में आ रही थी और मिरांडा बिस्तर से बाहर कूद गई. छाता फिर से कोने में खड़ा था, लेकिन अब उसका कार्ड गिर गया था इसलिए मिरांडा अब देख सकती थी कि कार्ड पीछे क्या लिखा था.

आज सुबह घड़ी का
अलार्म बजने तक मैं एक
जादुई छाता था.
उसके बाद मैं एक
साधारण छाता हूं.

मिरांडा खुश थी कि वो सुबह जल्दी उठ गई थी, लेकिन अब वो और भी खुश थी क्योंकि उसके पास एक साधारण छाता था. छाते पर अब कोई सोने की अंगूठी नहीं थी, लेकिन उसका इस बात पर कोई ध्यान नहीं गया. वो बहुत उत्साहित थी क्योंकि वो उसका जन्मदिन था और वो आज छह साल की थी.